



जीडीपी की नई श्रृंखला के प्रति समझ आम तौर पर पूछे जाने वाले प्रश्न

27 फरवरी, 2026

1. सकल घरेलू उत्पाद क्या है?

सकल घरेलू उत्पाद, जिसे आमतौर पर जीडीपी के तौर पर जाना जाता है, एक लेखा अवधि में घरेलू अर्थव्यवस्था में उत्पादित अंतिम वस्तु और सेवा का मूल्य है। अर्थव्यवस्था में एक अवधि से दूसरी अवधि में सार्थक तरीके से हुए बदलाव का आकलन करने के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि दोनों अवधि के लिए समान मापन विधि और डेटा स्रोतों का इस्तेमाल किया गया हो।

2. राष्ट्रीय लेखा के संदर्भ में आधार वर्ष क्या है? रीबेसिंग की प्रक्रिया क्या है? एमओएसपीआई की ओर से किए गए इस रीबेसिंग की प्रक्रिया का क्या महत्व है?

राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी में आधार वर्ष वह संदर्भ वर्ष है, जिसकी कीमतों का इस्तेमाल वास्तविक प्रगति की गणना करने के लिए किया जाता है।

पुनः आधार मापन यानी रीबेसिंग, एक नई आर्थिक संरचना पर पहुंचने के लिए नए अपडेटेड आंकड़ों के साथ आधार-अवधि मानकों को अपडेट करने की एक प्रक्रिया को संदर्भित करता है, जो सकल घरेलू उत्पाद और इसके घटकों, उपभोक्ता मूल्य सूचकांक और औद्योगिक उत्पादन के सूचकांक के अनुमान के लिए आधार के तौर पर काम करेगा।

किसी विशेष श्रृंखला के लिए सकल घरेलू उत्पाद और अन्य मैक्रो-इकोनॉमिक संकेतकों के संकलन में इस्तेमाल की जाने वाली कार्यप्रणाली और डेटा स्रोतों को आधार वर्ष संशोधन के समय अंतिम रूप दिया जाता है और आधार वर्ष के फिर से संशोधित होने तक बाद के सभी वर्षों तक जारी रहता है।

बीते कुछ वर्ष में अर्थव्यवस्था में हुए बदलावों को प्रदर्शित करने के लिए आधार वर्ष को समय-समय पर अपडेट किया जाता है। यह आर्थिक आंकड़ों को अधिक सटीक बनाने में मदद करता है। यह अनुमानों की गणना के लिए नए डेटा स्रोतों और बेहतर तरीकों के इस्तेमाल की भी अनुमति देता है।

3. एमओएसपीआई की ओर से किए गए आधार वर्ष संशोधनों की आवृत्ति कितनी है?

सामान्य परिस्थिति में, एमओएसपीआई का प्रयास रहा है कि अंतर्राष्ट्रीय अनुशांसा के अनुसार पांच वर्ष में समय-समय पर आधार वर्ष को संशोधित किया जाए।

4. जीडीपी आधार वर्ष को वित्त वर्ष 2022-23 में क्यों संशोधित किया जा रहा है?

राष्ट्रीय खातों के आधार वर्ष को 2011-12 से 2022-23 में संशोधित किया जा रहा है। एमओएसपीआई का प्रयास हर पांच साल में आधार वर्ष को संशोधित करना रहा है। हालांकि, वित्त वर्ष 2017-18 से वित्त वर्ष 2021-22 के बीच का वर्ष आधार वर्ष के तौर पर उपयुक्त नहीं था:

- **वित्त वर्ष 2017-18:** जीएसटी नामक बड़ा बदलाव प्रस्तुत किया गया था। इसके समेकन के लिए समय की आवश्यकता थी।
- **वित्त वर्ष 2019-20 और वित्त वर्ष 2020-21** कोविड-19 महामारी से प्रभावित थे।
- **वित्त वर्ष 2021-22** में कोविड के बाद के सुधार के आधार प्रभाव के कारण सकल घरेलू उत्पाद में तेज बढ़ोतरी देखी गई, जिससे यह अनुपयुक्त हो गया।

विस्तृत चर्चा के बाद, राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी पर सलाहकार समिति ने नए आधार वर्ष के रूप में 2022-23 की सिफारिश की। इस समिति में विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों, राज्य सरकारों, शिक्षाविदों और अनुसंधान संस्थानों के सदस्य शामिल हैं। समिति ने वित्त वर्ष को एक सामान्य आर्थिक वर्ष पाया और इस वर्ष के लिए राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण सर्वेक्षण डेटा भी उपलब्ध था।

5. नई जीडीपी श्रृंखला में, पिछली सीरीज के आंकड़े कितने वर्ष के लिए प्रदान किए जाएंगे? हम कब तक इसकी उम्मीद कर सकते हैं?

27 फरवरी, 2026 को वर्ष 2022-23 से 2025-26 के लिए वार्षिक और त्रैमासिक दोनों अनुमान जारी किए जाते हैं। पिछली सीरीज के आंकड़ों के दिसंबर 2026 तक जारी होने की उम्मीद है। प्रथा के अनुसार, भारत में पिछले आधार वर्ष तक नई सकल घरेलू उत्पाद श्रृंखला की संशोधित पद्धति का इस्तेमाल करके पिछली श्रृंखला के अनुमानों की दोबारा गणना की जाती है। उसके बाद, डेटा को अलग-अलग स्तर पर जोड़ा जाता है और वापस 1950-51 तक बढ़ाया जाता है। हालांकि, पिछली सीरीज तैयार करने का अंतिम तरीका एमओएसपीआई का मार्गदर्शन करने के लिए गठित सलाहकार समिति की सलाह से तय किया जाएगा।

6. संशोधित जीडीपी श्रृंखला संयुक्त राष्ट्र राष्ट्रीय लेखा प्रणाली जैसे अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकीय मानकों के साथ कितनी तुलना होगी?

भारत, राष्ट्रीय लेखा प्रणाली 2008 (एसएनए 2008) के अनुसार अपने जीडीपी अनुमान तैयार करता है, जो वैश्विक स्तर पर स्वीकृत मानक हैं। संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी प्रभाग (यूएनएसडी) अब एसएनए 2008 से एसएनए 2025 की ओर बढ़ रहा है। देशों से 2029-30 के दौरान एक नया मानक अपनाने की उम्मीद की जाती है। भारत ने अपने अगले आधार वर्ष संशोधन में एसएनए 2025 में स्थानांतरित करने की योजना बनाई है। इसके साथ ही, भारत आईएमएफ के विशेष डेटा प्रसार मानक (एसडीडीएस) का भी ग्राहक है, जो इशारा करता है कि देश अच्छी सांख्यिकीय नागरिकता के सभी परीक्षणों को पूरा करता है। संशोधित श्रृंखला अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकीय मानकों के अनुरूप है।

7. क्या एमओएसपीआई नई श्रृंखला में इस्तेमाल की जाने वाली कार्यप्रणाली और डेटा स्रोतों पर एक विस्तृत दस्तावेज जारी करने की योजना बना रहा है?

हां।

अनुमानों के संकलन में इस्तेमाल की जाने वाली कार्यप्रणाली और डेटा स्रोतों को एमओएसपीआई के प्रकाशन 'स्रोत और तरीके' में व्यापक रूप से प्रस्तुत किया जाएगा। यह प्रकाशन अगले कुछ महीनों में जारी होने वाला है।

8. नई जीडीपी श्रृंखला में कौन से नए आंकड़े शामिल किए जा रहे हैं?

अनुमानों को अधिक सटीक और विश्वसनीय बनाने के लिए नई जीडीपी श्रृंखला में कई नए और बेहतर डेटा स्रोतों का इस्तेमाल किया जा रहा है।

घरेलू क्षेत्र का मापन: इससे पहले, घरेलू क्षेत्र का अनुमान सर्वेक्षण या परोक्ष संकेतकों के बीच विकास दर का इस्तेमाल करके लगाया जाता था। नई श्रृंखला में, असंबद्ध क्षेत्र उद्यम (एसयूएसई) के वार्षिक सर्वेक्षण और आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) जैसे नियमित वार्षिक सर्वेक्षणों का इस्तेमाल करके वास्तविक स्तर के अनुमान तैयार किए जा रहे हैं। ये सर्वेक्षण घरेलू क्षेत्र में गतिशीलता को अधिक सटीक और नियमित रूप से मापेंगे। जीएसटी डेटा का इस्तेमाल अन्य डेटा स्रोतों से प्राप्त अनुमानों की जांच करने के लिए भी किया जाएगा।

जीएसटी डेटा: जीएसटी से मिले आंकड़ों का इस्तेमाल राज्यों में निजी निगम क्षेत्र के लिए अखिल भारतीय अनुमानों के आवंटन के लिए किया जा रहा है, और वार्षिक खातों में क्रॉस-वैलिडेशन के साथ ही चतुर्करण में इसका व्यापक इस्तेमाल और तिमाही राष्ट्रीय खातों में एक संकेतक के रूप में किया जा रहा है।

ई-वाहन: ई-वाहन के आंकड़ों का इस्तेमाल सड़क परिवहन सेवाओं से संबंधित निजी अंतिम उपभोग व्यय (पीएफसीई) का अनुमान लगाने के लिए किया जा रहा है।

सार्वजनिक वित्त प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस): पीएफएमएस से प्राप्त आंकड़ों का इस्तेमाल केंद्र सरकार के अनुमानों का संकलन करने और उन्हें राज्यों के बीच आवंटित करने के लिए किया जा रहा है। यह एफआरई स्तर पर ही संशोधित अनुमानों (आरई) के बजाय वास्तविक व्यय डेटा के इस्तेमाल की अनुमति देगा।

अध्ययन: विशेषज्ञ संस्थानों की ओर से हाल ही में किए गए अध्ययनों के आधार पर नई और अपडेट की गई दरों और अनुपातों को अपनाया जा रहा है। इनमें शामिल हैं: (i) कृषि के लिए भारतीय घास के मैदान और चारा अनुसंधान संस्थान की ओर से आयोजित घास और चारा अध्ययन; (ii) केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान और केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान की ओर से आयोजित मत्स्य पालन अध्ययन; (iii) निजी अंतिम उपभोग व्यय (पीएफसीई) में इस्तेमाल के लिए राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान की ओर से आयोजित दूध और दूध उत्पादों पर अध्ययन; और (iv) पीएफसीई के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित परिवहन सेवाओं पर अध्ययन।

9. नई जीडीपी श्रृंखला में प्रमुख पद्धतिगत परिवर्तन क्या हैं?

प्रमुख पद्धतिगत सुधारों में शामिल हैं:

- **घरेलू क्षेत्र को मापने में गतिशीलता में बढ़ोतरी:** पुरानी श्रृंखला में, घरेलू क्षेत्र का अनुमान या तो अंतर-सर्वेक्षण विकास के माध्यम से या छद्म संकेतकों के माध्यम से लगाया गया था। नई श्रृंखला में, प्रत्येक वर्ष आयोजित किए जा रहे नियमित सर्वेक्षणों (एसयूएसई और पीएलएफएस) के माध्यम से स्तर के अनुमानों को संकलित किया जा रहा है।
- **दोहरी अपस्फीति या एकल बाह्य गणन का इस्तेमाल:** नई श्रृंखला में, दोहरी अपस्फीति का इस्तेमाल विनिर्माण और कृषि क्षेत्र में किया जा रहा है, और एकल बाह्य गणन का

इस्तेमाल कहीं और किया जा रहा है। एकल अपस्फीति को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है। डिफ्लेटर का इस्तेमाल अधिक दानेदार स्तर पर भी किया जाएगा। नई जीडीपी श्रृंखला में विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के लिए 260 से अधिक दानेदार स्तर के सीपीआई का इस्तेमाल किया जा रहा है।

- **आपूर्ति और इस्तेमाल तालिकाओं के माध्यम से कम विसंगति:** उत्पादन और व्यय दृष्टिकोण से सकल घरेलू उत्पाद के बीच विसंगति को कम करने के लिए एसयूटी फ्रेमवर्क को राष्ट्रीय लेखा ढांचे के साथ एकीकृत किया जा रहा है। एसयूटी दिखाता है कि कौन से उद्योग उत्पादन (आपूर्ति) करते हैं और उद्योगों या अंतिम उपभोक्ताओं (इस्तेमाल) द्वारा उत्पादों का इस्तेमाल कैसे किया जाता है। एक संतुलित एसयूटी यह सुनिश्चित करता है कि कुल आपूर्ति अर्थव्यवस्था में कुल मांग से मेल खाती है।
- **अपडेटेड दरें और अनुपात:** संकलन में इस्तेमाल की जाने वाली दरों और अनुपातों को उन सर्वेक्षणों से संशोधित किया जा रहा है जो मध्यवर्ती अवधि में उपलब्ध हो गए हैं, या अन्य विशेषज्ञ संगठनों के सहयोग से एमओएसपीआई द्वारा किए गए अध्ययनों के माध्यम से।
- **बहु-गतिविधि निजी निगमों का पृथक्करण:** पुरानी श्रृंखला में, बहु-गतिविधि उद्यमों का कुल मूल्य वर्धित उद्यम की प्रमुख गतिविधि के लिए आवंटित किया गया था। नई श्रृंखला में, जैसे-जैसे एमजीटी-7/7ए डेटा उपलब्ध हो गया है (जहां निगमों को कारोबार में गतिविधिवार हिस्सेदारी की रिपोर्ट करने के लिए अनिवार्य किया गया है), इसका इस्तेमाल विभिन्न गतिविधियों में कुल मूल्य वर्धित (और अन्य समुच्चय) को अलग करने के लिए किया जा रहा है।
- **पीएफसीई का अधिक सूक्ष्म आकलन:** नई श्रृंखला एक मिश्रित दृष्टिकोण का इस्तेमाल करती है: (क) घरेलू उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण का बेहतर इस्तेमाल; (ख) उत्पादन और अन्य डेटा स्रोतों के आधार पर प्रत्यक्ष आकलन; (ग) वस्तु प्रवाह दृष्टिकोण। नवीनतम प्रासंगिक मानक, सीओआईसीओपी 2018 को भी अपनाया गया है।

- **नया डेटा स्रोत:** जीएसटी डेटा, पीएफएमएस, ई-वाहन और अन्य स्रोत, जो अधिक व्यापक हैं और कम समय अंतराल पर उपलब्ध हैं, अनुमानों के संकलन और पुष्टि के लिए मौजूदा डेटा स्रोतों को बढ़ाने के लिए खोजे गए हैं।

10. उपर सूचीबद्ध सुधारों का विवरण कहां से प्राप्त किया जा सकता है?

राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी पर सलाहकार समिति (एसीएनएएस) का गठन 2024 में एमओएसपीआई को अन्य बातों के अलावा, कार्यप्रणालीगत सुधार, नए डेटा स्रोतों को शामिल करने आदि जैसे मुद्दों पर सुझाव देने के लिए किया गया था। विशेष विषयों पर विचार-विमर्श करने के लिए एसीएनएएस के अंतर्गत पांच उप-समितियों का गठन किया गया था। इन समितियों के सदस्य 56 विशेषज्ञों ने बीते दो वर्ष के दौरान इन मुद्दों पर 40 बैठकों में विचार-विमर्श किया।

उपर्युक्त सुधारों का विवरण अखिल भारतीय अनुमानों से संबंधित तीन उप-समितियों की रिपोर्टों में उपलब्ध है, जो मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय लेखा उप-समिति और एसएनए अद्यतन पर उप-समिति की रिपोर्ट बाद में जारी की जाएगी।

11. भारत के घरेलू क्षेत्र को और अधिक व्यापक रूप से पकड़ने के लिए नई श्रृंखला में क्या उपाय किए गए हैं?

पुरानी श्रृंखला में, गैर-निगमित क्षेत्र उद्यमों पर सर्वेक्षण और रोजगार सर्वेक्षण का इस्तेमाल करके आधार वर्ष के लिए घरेलू क्षेत्र का अनुमान लगाया गया था। बाद के वर्षों के लिए, सर्वेक्षण या प्रॉक्सी संकेतकों के बीच बढ़ोतरी का इस्तेमाल करके आधार वर्ष का विस्तार करके अनुमान लगाए गए थे।

हालांकि, नई श्रृंखला में, गैर-निगमित क्षेत्र उद्यम (एसयूएसई) के वार्षिक सर्वेक्षण और आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) जैसे नियमित सर्वेक्षणों का इस्तेमाल करके हर साल घरेलू क्षेत्र के वास्तविक स्तर के अनुमान तैयार किए जा रहे हैं। यह दृष्टिकोण घरेलू क्षेत्र को अधिक सटीक

और गतिशील रूप से मापने की अनुमति देता है, जिससे आधार वर्ष से बहिर्वेशन की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

12.क्या घरों में काम पर रखे गए घरेलू कामगारों (जैसे रसोइये, चालक, घरों की सफाई करने वाले व्यक्ति आदि) का योगदान जीडीपी के अनुमान में शामिल है?

हां, ऐसी गतिविधियों को "घरेलू कर्मियों के नियोक्ता के रूप में परिवारों की गतिविधियां" कहा जाता है और उनका योगदान सकल घरेलू उत्पाद के अनुमान में शामिल किया जाता है। यह अनुमान ऐसे श्रमिकों की संख्या और वार्षिक पीएलएफएस आंकड़ों से उपलब्ध उनके वेतन पर आधारित है।

13.संशोधित आधार वर्ष डिजिटल सेवाओं, प्लेटफॉर्म अर्थव्यवस्था, गिग श्रमिकों आदि जैसे नए क्षेत्रों के मापन में कैसे सुधार करेगा?

डिजिटल सेवाओं और मध्यस्थ मंचों आदि सहित सभी आर्थिक गतिविधियों को पहले से ही कॉरपोरेट क्षेत्र के लिए एमसीए-21 डेटा के माध्यम से शामिल किया गया था।

2022-23 सीरीज में, एएसयूएसई और पीएलएफएस नामक दो वार्षिक सर्वेक्षणों की उपलब्धता के साथ, इन सर्वेक्षण-आधारित अनुमानों के माध्यम से घरेलू क्षेत्र (जैसे गैर-निगमित छोटे व्यवसाय, स्व-नियोजित लोग, अनौपचारिक आर्थिक कार्य, आदि) में इन क्षेत्रों के जीडीपी के योगदान को सालाना अधिक सटीक रूप से दर्ज किया जा रहा है। एएसयूएसई के पास गिग श्रमिकों को पकड़ने के लिए समर्पित आर्थिक गतिविधि कोड हैं, जैसे कि एग्रीगेटर्स (जैसे ओला, उबर, आदि) के अंतर्गत काम करने वाले ड्राइवर और वितरण सेवा गतिविधियां (जैसे जोमैटो, स्विगी, आदि)। नई श्रृंखला में सभी आर्थिक गतिविधियों को अधिक व्यापक रूप से अपने में जोड़ा जा रहा है।

14.क्या नई श्रृंखला सकल घरेलू उत्पाद अपस्फीतिकारक की सटीकता के बारे में लगातार चिंताओं को व्यापक रूप से हल करती है?

हां। सकल घरेलू उत्पाद के आधार संशोधन का मार्गदर्शन करने के लिए एक सलाहकार समिति का गठन किया गया था। एक उप-समिति ने विशेष रूप से अपस्फीतिकारक से संबंधित मुद्दों की जांच की। समिति की सिफारिश के अनुसार, नई श्रृंखला में एकल अपस्फीति को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है। वास्तव में विनिर्माण और कृषि जैसे क्षेत्रों में दोहरी अपस्फीति लागू की जा रही है। अन्य क्षेत्रों में एकल बहिर्वेशन का इस्तेमाल किया जा रहा है। अपस्फीतिकारकों को अधिक विस्तृत, बारीक स्तर पर लागू किया जा रहा है। इन बदलावों से नई श्रृंखला में सकल घरेलू उत्पाद अपस्फीतिकारकों की सटीकता और विश्वसनीयता में सुधार होने की उम्मीद है।

15.क्या एमओएसपीआई अभी भी नई श्रृंखला में जीडीपी अनुमानों की गणना में 2011-12 आधार वर्ष के साथ डब्ल्यूपीआई का इस्तेमाल कर रहा है?

क्या मंत्रालय नई जीडीपी श्रृंखला में डीपीआईआईटी द्वारा तैयार पीपीआई का इस्तेमाल करेगा? डब्ल्यूपीआई का आधार वर्ष संशोधन अभी भी प्रगति पर है। जब तक अद्यतन डब्ल्यूपीआई उपलब्ध नहीं हो जाता, तब तक मौजूदा डब्ल्यूपीआई का इस्तेमाल डिफ्लेटर के रूप में किया जाता रहेगा। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पुरानी श्रृंखला की तुलना में नई श्रृंखला में डब्ल्यूपीआई के इस्तेमाल की विधि में बदलाव आया है। नई श्रृंखला में, डब्ल्यूपीआई का इस्तेमाल दानेदार स्तर पर किया जाता है। विनिर्माण क्षेत्र में उत्पादन और मध्यवर्ती खपत के लिए अलग-अलग वस्तु-स्तरीय डब्ल्यूपीआई का इस्तेमाल किया जाता है। विनिर्माण क्षेत्र में दोहरी अपस्फीति को अपनाने से पुरानी श्रृंखला की तुलना में इसके जीवीए अनुमानों की माप में सुधार होगा, जहां उत्पादन और निवेश दोनों वस्तुओं के लिए एक ही डब्ल्यूपीआई का इस्तेमाल किया गया था। वस्तु स्तर पर डब्ल्यूपीआई का इस्तेमाल करने से वस्तुओं और उप-श्रेणियों को एकत्रित करते समय वजन में परिवर्तन के कारण होने वाली विकृतियों से भी बचा जा सकता है।

इसके साथ ही, मंत्रालय की योजना डीपीआईआईटी की ओर से आधिकारिक तौर पर जारी किए जाने के बाद निकट भविष्य में पीपीआई को शामिल करने की है।

16.आपूर्ति और इस्तेमाल तालिका ढांचा क्या है?

आपूर्ति और इस्तेमाल तालिकाओं में बताया गया है कि उत्पादों (वस्तुओं और सेवाओं) को अर्थव्यवस्था में कैसे लाया जाता है (या तो घरेलू उत्पादन या अन्य देशों से आयात के परिणामस्वरूप), और उन उत्पादों का इस्तेमाल कैसे (मध्यवर्ती खपत के रूप में या परिवारों द्वारा अंतिम खपत के रूप में, गैर-लाभकारी संस्थानों द्वारा घरों की सेवा (एनपीआईएसएच), सामान्य सरकार या सकल पूंजी निर्माण या निर्यात के रूप में) किया जाता है। आपूर्ति और इस्तेमाल तालिकाएं, सकल घरेलू उत्पाद को मापने के लिए उत्पादन, आय और व्यय दृष्टिकोण के सभी घटकों को संतुलित और एकीकृत करने के लिए एक शक्तिशाली ढांचा प्रदान करती हैं।

17. आंकड़ों में यह विसंगति क्यों आती है?

कई स्रोतों में डेटा कवरेज में अंतर, जानकारी उपलब्ध होने में समय की कमी, अग्रिम अनुमानों के लिए प्रॉक्सी डेटा का इस्तेमाल और विभिन्न आकलन विधियों के कारण विसंगतियां होती हैं।

18. इस विसंगति से निपटने के लिए एसएनए की क्या सिफारिशें हैं?

राष्ट्रीय लेखा प्रणाली 2008 (एसएनए 2008) के अनुसार और राष्ट्रीय लेखा प्रणाली 2025 (एसएनए 2025) में जारी, जीडीपी अनुमानों में सांख्यिकीय विसंगति से निपटने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें की गई हैं:

- I. सांख्यिकीय विसंगति को आधिकारिक जीडीपी अनुमानों के साथ स्पष्ट रूप से दिखाया और प्रकाशित किया जा सकता है। यह पारदर्शिता को बढ़ाता है, जिससे यूजर समानता को मजबूर करने के लिए अनुमानों को समायोजित करने के बजाय सांख्यिकीय अंतर को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं।
- II. एक अन्य दृष्टिकोण आपूर्ति और इस्तेमाल तालिका (एसयूटी) ढांचे से शक्ति उधार लेकर उत्पादन/ आय और उत्पादन पक्ष के अनुमानों में सामंजस्य स्थापित करना है।

19. नई जीडीपी श्रृंखला में विसंगतियों को कैसे समायोजित किया जाएगा?

नई जीडीपी श्रृंखला में, आपूर्ति और इस्तेमाल तालिका (एसयूटी) फ्रेमवर्क का इस्तेमाल उत्पादन और व्यय अनुमानों के बीच अंतर को मिलाने के लिए किया जा रहा है। एसयूटी ढांचा उत्पाद-संतुलन सिद्धांत को लागू करता है, जो अलग-अलग डेटा को संरेखित करने और सभी क्षेत्रों में स्थिरता सुनिश्चित करने का एक मजबूत तरीका प्रदान करता है। एसयूटी ढांचे को जीडीपी संकलन में एकीकृत करके, अंतिम अनुमानों में विसंगतियों का समाधान किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप आंतरिक रूप से जीडीपी अनुमान सुसंगत हैं।

20. क्या संस्थागत क्षेत्रवार अनुमान संकलित किए जाते हैं और संस्थागत क्षेत्रवार अनुमानों के संकलन में कौन से डेटा स्रोतों का इस्तेमाल किया जाता है?

एसएनए 2008 के बाद, अर्थव्यवस्था को निम्नलिखित संस्थागत क्षेत्रों में विभाजित किया गया है:

- I. **गैर-वित्तीय निजी कॉर्पोरेशन क्षेत्र:** कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय (एमसीए) से उनके वार्षिक लाभ-हानि खाते और बैलेंस शीट आदि के आंकड़ों का इस्तेमाल करके।
- II. **वित्तीय कॉर्पोरेशन क्षेत्र:** वित्तीय कंपनियों, नियामकों (एसईबीआई, आरबीआई, आईआरडीएआई आदि) के मुनाफा-घाटा खाते और बैलेंस शीट आदि से संबंधित आंकड़ों का इस्तेमाल करके।
- III. **सामान्य सरकारी क्षेत्र:** केंद्र और राज्य सरकारों के बजट दस्तावेजों और खर्च पर पीएफएमएस आंकड़ों का इस्तेमाल करके।
- IV. **घरेलू क्षेत्र:** कृषि के लिए, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय से फसलों के उत्पादन के आंकड़ों और राज्य/ केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों से फसलों के मूल्य आंकड़ों का इस्तेमाल करके, संबंधित मंत्रालयों से पशुपालन और मत्स्य पालन से जुड़े आंकड़ों का इस्तेमाल करके, निर्माण क्षेत्र के लिए कई स्रोतों से उद्योग में उपयोग की जाने वाली विभिन्न वस्तुओं के आंकड़ों का इस्तेमाल करके और बाकी क्षेत्रों के लिए एनएसओ, एमओएसपीआई, यानी एसयूएसई और पीएलएफएस की ओर से किए गए वार्षिक सर्वेक्षणों का इस्तेमाल करके।

V. गैर-लाभकारी संस्थान घरेलू सेवा (एनपीआईएसएच) क्षेत्र: वर्तमान में, भारत में, एनपीआईएसएच के लिए अनुमान सर्वेक्षण डेटा का इस्तेमाल करके घरेलू क्षेत्र में शामिल किए जाते हैं।

प्रत्येक उद्योग के लिए अनुमान संस्थागत क्षेत्र की ओर से तैयार किए जाते हैं। घरेलू क्षेत्र के लिए, कृषि, निर्माण और आवासों का स्वामित्व जैसे उद्योग अन्य उद्योगों की तुलना में एक अलग पद्धति का इस्तेमाल करते हैं। इन विधियों की विस्तृत व्याख्या प्रासंगिक चर्चा पत्रों और उप-समिति की रिपोर्टों में उपलब्ध है।

21. सामान्य सरकारी क्षेत्र के अनुमानों को संकलित करने के लिए प्रमुख डेटा स्रोत क्या हैं? सामान्य सरकारी क्षेत्र के अनुमान कैसे संकलित किए जाते हैं?

सामान्य सरकारी क्षेत्र के लिए मुख्य डेटा स्रोतों में शामिल हैं: केंद्र और राज्य सरकार के बजट दस्तावेज (जैसे, प्राप्त बजट, सभी मंत्रालयों/ विभागों के अनुदान के लिए विस्तृत मांग), स्थानीय निकायों और स्वायत्त संस्थानों के वार्षिक खाते।

चूंकि, सरकार गैर-बाजार आधार पर सेवाएं प्रदान करती है, इसलिए इस क्षेत्र के उत्पादन का मूल्यांकन उनके उत्पादन में होने वाली लागतों के जोड़ से किया जाता है, यानी कर्मचारियों का मुआवजा (सीई), मध्यवर्ती खपत (आईसी) और निश्चित पूंजी की खपत (सीएफसी)। इस मामले में मूलभूत इकाइयां हैं:

- शुद्ध मूल्य वर्धित (एनवीए) = सीई = वेतन + मजदूरी + पेंशन + अन्य लाभ
- सकल मूल्य वर्धित (जीवीए) = एनवीए + सीएफसी
- उत्पादन का सकल मूल्य (जीवीओ) = जीवीए + आईसी

22. नई श्रृंखला में सामान्य सरकारी क्षेत्र के आकलन में कौन से बड़े बदलाव शामिल किए गए हैं?

नई श्रृंखला में सामान्य सरकार के अनुमान में जोड़े गए कुछ प्रमुख सुधार इस प्रकार हैं:

- राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के लागू होने और ओपीएस तथा एनपीएस के सह-अस्तित्व के कारण पेंशन में समायोजन
- एचआरए के बदले सरकार की ओर से प्रदान किए गए आवास का आकलन
- स्थानीय निकायों और स्वायत्त संस्थानों के मामले में बेहतर कवरेज
- स्थिर कीमतों पर उत्पाद सब्सिडी का अनुमान लगाने के लिए वॉल्यूम एक्सट्रापोलेशन विधि का इस्तेमाल

उपसमिति की रिपोर्टों में विवरण उपलब्ध हैं।

23.नए आधार वर्ष 2022-23 के तहत तिमाही जीडीपी अनुमान में कौन से पद्धतिगत सुधार किए गए हैं?

संशोधित आधार वर्ष (2022-23) के अंतर्गत, महत्वपूर्ण पद्धतिगत सुधारों के माध्यम से तिमाही जीडीपी अनुमान ढांचे को सुदृढ़ किया गया है, विशेष रूप से पहले की प्रो-रेटा बेंचमार्किंग विधि से आनुपातिक डेंटन विधि में बदलाव किया गया है। नई बेंचमार्किंग विधि कृत्रिम असंतुलन को हटा देगी, जिसे आमतौर पर "चरण समस्या" के रूप में जाना जाता है, और यह सुनिश्चित करती है कि आर्थिक गतिविधि में अंतर्निहित अल्पकालिक गतिविधियों को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करने वाली सहज और अधिक सुसंगत तिमाही श्रृंखला हो।

24.तिमाही जीडीपी संकलन में किन नए या विस्तारित डेटा स्रोतों का इस्तेमाल किया जा रहा है?

नई श्रृंखला विनिर्माण और गैर-वित्तीय सेवा क्षेत्रों में जीएसटी डेटा का व्यापक और अधिक व्यवस्थित इस्तेमाल करती है। व्यापार के दौरान की गई बाहरी कर योग्य आपूर्ति को जीएसटी डेटा में व्यापक रूप से शामिल किया गया है। संबंधित संस्थागत क्षेत्र के लिए विभिन्न आर्थिक गतिविधियों की बाह्य कर योग्य आपूर्ति में बढ़ोतरी का इस्तेमाल तिमाही अनुमानों के संकलन में उच्च आवृत्ति संकेतक के रूप में किया जा रहा है।

तिमाही स्तर पर वित्तीय सेवाओं के लिए एफआईएसआईएम आधारित दृष्टिकोण अपनाया गया है। उत्पाद करों और सब्सिडी के लिए अनुमान विधियों को बेहतर मात्रा संकेतकों का इस्तेमाल करके मजबूत किया गया है, और तिमाही स्तर पर सकल निश्चित पूंजी निर्माण और सेवाओं में व्यापार का अनुमान लगाने की विधि वार्षिक दृष्टिकोण के साथ अधिक संरेखित है।

इसके साथ ही, क्षेत्रीय विशेषताओं के आधार पर सीपीआई, डब्ल्यूपीआई, इकाई मूल्य सूचकांक और सेवा-विशिष्ट अपस्फीतिकारक जैसे उपयुक्त सूचकांकों के अधिक इस्तेमाल के साथ, कुल अपस्फीतिकारक से वस्तु-स्तर और क्षेत्र-विशिष्ट मूल्य सूचकांकों की ओर बढ़ते हुए अपस्फीतिकरण प्रथाओं में सुधार किया गया है।

25. तिमाही अनुमानों और वार्षिक राष्ट्रीय खातों के बीच संरेखण कैसे मजबूत हुआ है?

संशोधित त्रैमासिक संकलन ढांचे को क्षेत्रीय वर्गीकरण, अपस्फीति रणनीतियों और आकलन प्रथाओं के संदर्भ में वार्षिक राष्ट्रीय लेखा पद्धति के साथ अधिक निकटता से जोड़ा गया है। यह सामंजस्य तिमाही और वार्षिक जीडीपी और जीवीए अनुमानों के बीच अधिक स्थिरता सुनिश्चित करता है। इसके साथ ही, तिमाही श्रृंखला में अपनाई गई नई बेंचमार्किंग विधि वार्षिक राष्ट्रीय लेखा श्रृंखला के साथ निरंतरता को मजबूत करेगी।

26. तिमाही राष्ट्रीय खातों में कौन से क्षेत्र-विशिष्ट परिष्करण और अपस्फीति प्रथाओं में सुधार किए गए हैं?

अपस्फीति विधि में कई क्षेत्र-विशिष्ट परिष्करण पेश किए गए हैं। एकल अपस्फीति की पिछली प्रथा के मुकाबले विनिर्माण क्षेत्र के लिए दोहरी अपस्फीति को अपनाया गया है। इस दृष्टिकोण के अंतर्गत, उत्पादन और निवेश को उनके संबंधित मूल्य सूचकांकों का इस्तेमाल करके अलग-अलग घटाया जाता है, जिससे विनिर्माण क्षेत्र के वास्तविक विकास का अधिक सटीक मापन किया जा सकता है। इसके अलावा, सीपीआई, डब्ल्यूपीआई, इकाई मूल्य सूचकांक आदि जैसे अपस्फीतिकारक का इस्तेमाल पुरानी श्रृंखला में समग्र स्तर से नई श्रृंखला में वस्तु-समूह स्तर की ओर बढ़ते हुए अधिक गहरे स्तर पर किया जा रहा है। इसके अलावा, सीपीआई की नई श्रृंखला पर विचार किया

जाता है और निकट भविष्य में जब भी जारी किया जाता है तो डब्ल्यूपीआई/ पीपीआई की नई श्रृंखला को अपनाया जाता है।

27. तिमाही जीडीपी अनुमानों की गणना कैसे की जाती है?

एनएसओ, एमओएसपीआई मानक-सूचक का इस्तेमाल कर तिमाही जीडीपी अनुमानों की गणना करता है और यह एसएनए 2008 और आईएमएफ की तिमाही राष्ट्रीय लेखा नियमावली 2017 के बाद दुनिया भर में इस्तेमाल की जाने वाली एक मानक विधि है। विधि इस प्रकार काम करती है:

- वार्षिक जीडीपी अनुमान एक संदर्भ बिंदु या मानक के रूप में कार्य करते हैं।
- उच्च आवृत्ति डेटा, जैसे मासिक या त्रैमासिक संकेतक, तिमाही सकल घरेलू उत्पाद का अनुमान लगाने के लिए इन बेंचमार्क अनुमानों पर लागू किए जाते हैं।

वार्षिक अनुमानों के लिए मानक निर्धारण अस्थायी स्थिरता सुनिश्चित करता है। अनुमान प्राप्त करने के लिए बेंचमार्क अनुमानों पर उच्च आवृत्ति संकेतक लागू किए जाते हैं। संकेतकों के डेटा स्रोतों के विचलन और परिभाषा और कवरेज के संदर्भ में वार्षिक अनुमानों के कारण, तिमाही अनुमान स्वाभाविक रूप से संशोधन के लिए प्रवण हैं। नई श्रृंखला में, आनुपातिक डेंटन बेंचमार्किंग को अपनाने से बढ़ोतरी होती है, नए डेटा स्रोतों को शामिल किया जाता है और गहरे स्तर पर आकलन बढ़ता है और बेहतर अपस्फीति रणनीति से अनुमानों में अधिक स्थिरता और मजबूती आने की संभावना है।

28. क्या नई श्रृंखला में पहले जारी किए गए अनुमानों और तिमाही विकास दरों में बदलाव होगा?

हां। जैसे-जैसे आधार वर्ष बदला जा रहा है और गणना की विधि को अपडेट किया जा रहा है जैसे कि नए संकेतक जोड़ना, अधिक विस्तृत डेटा का इस्तेमाल करना और मुद्रास्फीति के लिए

समायोजन करने के बेहतर तरीके आदि। आधार वर्ष 2022-23 के अनुसार 2022-23 से 2025-26 वर्षों के लिए वार्षिक और त्रैमासिक अनुमान 27 फरवरी 2026 को जारी किए जाएंगे।

29.सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) अनुमान में एमओएसपीआई की क्या भूमिका है?

एनएसओ, एमओएसपीआई जीएसडीपी अनुमानों का अनुमान लगाने के लिए दिशा-निर्देश जारी करता है और राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) को समान परिभाषा, अवधारणाओं और कार्यप्रणाली का पालन करते हुए मार्गदर्शन और सलाह प्रदान करके अपने सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) का अनुमान लगाने में मदद करता है। राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों के अर्थशास्त्र और सांख्यिकी निदेशालय (डीईएस) अधिकतर समान डेटा स्रोतों से अपने राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश-विशिष्ट डेटा का इस्तेमाल करके अपने जीएसडीपी का संकलन करते हैं।

30.नए आधार के साथ जीएसडीपी श्रृंखला कब अपेक्षित है?

जब एनएसओ, एमओएसपीआई की ओर से राष्ट्रीय जीडीपी आधार वर्ष का अपडेशन किया जाता है, तो राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश भी अपने जीएसडीपी आधार वर्ष का मिलान करने के लिए अपडेट करते हैं। यह राज्य/ केंद्र शासित प्रदेशों के जीएसडीपी अनुमानों को राष्ट्रीय अनुमान के अनुरूप रखता है। अपडेशन आधार वर्ष 2022-23 के साथ जीडीपी जारी होने के बाद, एनएसओ, एमओएसपीआई राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों को जीएसडीपी की गणना के तरीके में पद्धतिगत बदलावों या सुधारों के बारे में सूचित करेगा।

31.नए आधार वर्ष संशोधन के दौरान जीएसडीपी के अनुमान में कौन से प्रमुख पद्धतिगत सुधार किए गए हैं?

प्रमुख पद्धतिगत सुधारों में शामिल हैं: (i) कुछ क्षेत्रों या उप-क्षेत्रों के लिए प्रत्यक्ष अनुमान के पक्ष में आवंटन-आधारित तरीकों में कमी, (ii) निश्चित अनुपात और प्रॉक्सी पर निर्भरता में कमी, (iii) आर्थिक गतिविधि की राज्य-वार जानकारी का बेहतर इस्तेमाल, (iv) राज्यों में अधिक पद्धतिगत स्थिरता।

32. जीडीपी के अनुमान आम नागरिकों के जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं?

जीडीपी अनुमान न केवल एक मैक्रो-इकोनॉमिक संकेतक है, बल्कि यह राष्ट्रीय स्तर पर मानव विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। सकल घरेलू उत्पाद अर्थव्यवस्था में विभिन्न क्षेत्रों का योगदान प्रदान करता है और उचित नीतियों को तैयार करने में मदद करता है, जो किसानों, छोटे व्यवसायों, निर्माताओं और सेवा उद्यमों सहित लोगों की मदद करता है।

उदाहरण के लिए, पहले कृषि में धान, गेहूं आदि फसलों के उत्पादन पर अधिक जोर दिया जाता था। सकल घरेलू उत्पाद के अनुमान फसल वार उत्पादन के आंकड़े प्रदान करते हैं। अब फल, तिलहन, दलहन, मत्स्य पालन आदि की खेती पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। इसी तरह, सरकार की ओर से विनिर्माण क्षेत्र पर अधिक जोर दिया जा रहा है। इसके साथ ही, निवेश निर्णय, लोन लेने की क्षमता आदि भी सकल घरेलू उत्पाद के अनुमानों से प्रभावित होते हैं। इस प्रकार, यह हर नागरिक के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पीके/केसी/एमएम